International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 273-274

अपनी मौलिकता से दूर होती उच्च–शिक्षा

डॉ0 अशोक कुमार दुबे

एसोशिएट प्रोफेसर संस्कृत–विभाग, बी0एस0एन0बी0 पी0जी0 कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

आज वैश्वीकरण के युग में शिक्षा के मायने बदल गये है। अपनी संस्कृति से उखड़कर विकास की अंधी दौड़ में आज का युवा अपनी जड़ों से दूर जा रहा है। बचपन से जब बच्चा पढ़ना प्रारम्भ करता है तो उसके मन–मतिष्क में यह बात बहुत अच्छी तरह से बैठा दी जाती है कि उसे बड़े होकर ऐसी शिक्षा प्राप्त करनी है जिससे अधिक से अधिक धनोपार्जन कर सके। इसी भौतिकवादी सोच के परिवेश में बढ़ता हुआ बालक उपभोक्तावादी संस्कृति को अपनाता है और उच्च शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य अधिक से अधिक धन कमाना ही सीखता है। सच तो यह है कि कम समय में अधिक से अधिक उत्पाद को बेच कर अपनी कम्पनी को लाभ दिलाने की प्रतिस्पर्धा में हम शिक्षा का सही अर्थ विस्मृत कर चुके है।

मूल शब्दः मौलिकता, उच्च–शिक्षा।

प्रस्तावना

शिक्षा तो संस्कृति से जुड़ी है, शिक्षा मनुष्य को साक्षर ही नहीं अपितु संस्कारवान भी बनाती है। शिक्षा ही वह संस्कार देती है। जब हम यह प्रार्थना करते है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तुः मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्।।[1]

आज समाज में भ्रष्टाचार अत्यधिक बढ़ गया है। क्योंकि यदि हमें शिक्षा के साथ यह संस्कार भी मिला होता तो ऐसा कदापि न होता–

वृत्तं यत्नेनसंरक्षेद् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतोहतः।।

व्यक्ति को अपने चरित्र की यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिये। धन तो आता और जाता है। धन के समाप्त होने पर मनुष्य निर्धन होता है, परन्तु चरित्र नष्ट हो जाने के पश्चात् व्यक्ति मृतक सा हो जाता है। इसी प्रकार विद्या विनम्रता देती है।

विद्या ददाति विनयं विनयात् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमात्नोति धनाद्धर्म ततः सुखम।।

अर्थात् विद्या विनम्रता को देती है। विनम्रता से पात्रता (योग्यता) आती है। पात्रता से धन मिलता है धन से धर्म और धर्म से सुख मिलता है। ध्यान देने की बात है कि धन से जब धर्म होगा तभी सुख मिलेगा जो धन से तत्काल सुख चाहते है वह अत्यधिक धनोपार्जन के बाद भी सुखी एवं संतुष्ट नहीं होते।

यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा से जुड़े हुये अधिकांश संस्थान अत्यधिक मात्रा में धन उगाही करके लोगों को यंत्र की तरह तैयार करते हैं और वह धन प्राप्ति का साधन मात्र बनते हैं कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा से केवल साक्षर व्यक्ति को केवल यंत्र न बनायें अपितु नीति, मानवता से सम्बन्धित सारी अच्छी बातों को बतायें जो आगे चलकर उन्हें एक अच्छा इन्सान बनाने में मदद कर सके। उच्च शिक्षा का उद्देश्य ऐसा होना चाहिये जो छात्रों के अन्दर सद्विचारों का प्रवेश कर सके, और उसकी एक सोच विकसित हो सके। उनके अन्दर यह भावना आए कि वह केवल अपने ही लिए धनोपर्जन करके सुख सुविधाओं से युक्त होने में ही जीवन को सार्थक न मानें बल्कि अपने साथ–साथ सबके विकास की सोच, नैतिकता मानवता को अपनाये रखें। हमारे पूर्व राष्ट्रपति ए0पी0जे0अब्दुल कलाम बहुत बड़े और अच्छे इंसान थे। उनके पास जो ज्ञान एवं प्रतिभा थी उससे वे समान्य जन के कल्याण के लिए उपयोग करना चाहते थे उस शिक्षा का क्या महत्त्व जो समाज एवं राष्ट्र के नाम न आ सके। उन्होने ऐसी शिक्षा पायी जिसका उपयोग जनकल्याण के लिए किया। राष्ट्रपति पद से अवकाश के उपरान्त उन्होंने मूल्य परक, संस्कारपरक शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा का प्रचार किया। छात्रों को उत्साहित करते हुये कहा कि सपने देखो सपने नहीं देखोगे तो पूरा कैसे करोगे। इस प्रकार छात्रों के अन्दर की ऊर्जा निकाल कर सही दिशा में विकास पथ पर लगाना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये फिर वही छात्र आगे चलकर डॉक्टर इंजीनियर अध्यापक वैज्ञानिक जो भी बनेगा वह अपनी आत्मा की आवाज सुनेगा। अपनी शक्ति का गलत इस्तेमाल नहीं करेंगा एवं प्रतिभा का दुरुपयोग नही करेगा। माता–पिता शिक्षक ही समाज का निर्माण करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उच्च शिक्षा ऐसी हो जो केवल व्यवसायिक रंग में रंगकर पाश्चात्य–जीवन शैली के अभ्यस्त युवाओ का समूह न तैयार करे अपितु ऐसा शिक्षित प्रशिक्षित देश का भविष्य तैयार हो जो देश की संस्कृति को भी सहेजे तथा वैश्वीकरण की दौड में भी स्वयं को खडा रख सके।

संस्कार युक्त शिक्षा जो पाते है वह इतिहास बनाते हैं तथा युग प्रवर्तक होते हैं अतः आज वैश्वीकरण के युग में जब विश्व एक रंग मंच के समान हैं विश्व के समस्त देशों की संस्कृतियां परस्पर परिचित हो रही हैं। हमारे यहाँ से प्रशिक्षित होकर लोग धनापर्जन हेतु बाहर जा रहे हैं उन्हे अपनी सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा देना बहुत आवश्यक है। संस्कार से जुड़ी शिक्षा से युक्त होकर वह अधिक अच्छे तरीके कार्य करेगें।

विश्व में अपने देश की पहचान बनायेगें। आकाश में तो उड़ेगे पर धरती पर मजबूती से जमे रहेगें। स्वामी विवेकानन्द केवल शिक्षित नहीं थे। अपनी संस्कृति की गरिमा का आधार बनाकर दिया गया उनका वक्तव्य पूरे विश्व में भारतवर्ष का उद्घोष बन गया।

राम के पास शक्ति के साथ संस्कार था। जो पूज्य बने। रावण के पास शक्ति के साथ कुसंस्कार था अतः उसका विनाश हुआ। इसी प्रकार विद्या ज्ञान शक्ति भी जब संस्कारी व्यक्ति के हाथ में होगी उत्थान करेगी। देश समाज का कल्याण करेगी। अन्यथा स्वार्थ भोग की प्रवृत्ति वाली संकुचित मानसिकता को बढ़ावा मिलेगा।[2]

यह सच है कि सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग के हम एक उँचाई पर हैं पर इसके साथ ही यह भी सच हैं कि वैश्वीकरण का सबसे बड़ा शिकारी किसी देश की संस्कृति ही होती है। हमें अपने युवा को तकनीकी प्रौद्योगिकि शिक्षा के साथ यह ज्ञान भी देना होगा कि हमारी संस्कृति नष्ट न होने पाये, खोने न पाये। पश्चिम सभ्यता का स्वंय पर हावी न होने दें।

आज निःसदेह रोजगार के असंख्य अवसर हमारे युवाओं के सामने है। लोगों की सोच बदल गयी हैं उच्च शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य परिवर्तित हो गया हैं अब शिक्षा ज्ञानार्जन के साथ रोजगारपरक हो गयी है। लोग उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उतना ही जाते है जितना उनके धनार्जन के लिए उपयुक्त हो। गहन अध्ययन शोध में लोगों की रुचि घट रही है क्योंकि धन तो हर किसी के जीवन की आवश्यकता है। बहुत से लोग ऐसे है जो उच्च शिक्षा में रुचि के बाद भी धनाभाव के कारण शिक्षा छोड़ रोजगार में लग जाते हैं, ऐसी विवशता को हमारे शिक्षा व्यवस्थापकों को समझना होगा। यदि वह उच्च शिक्षा में शोध, या प्रशिक्षण की दिशा में आगे बढ़ना चाहते है तो उन्हें आर्थिक सहायता उपलब्ध करायें।

युवाओं के चरित्र निर्माण में उच्च शिक्षा की अहम भूमिका है, आज के युवाओ की आँखों में सपने नहीं है, उसके जीवन का उद्देश्य है एक कार हो, एक अच्छा फ्लैट हो, बैंक बैलेंस हो किसी भी माध्यम से आने वाला पैसा हो बस। ऐसी सोच यदि होगी तो हमारी अस्मिता, हमारी पहचान कैसे बचेगी। राष्ट्र गौरव को सम्भालने का स्वप्न होना चाहिए। हमारे बच्चे क्या सीखते हैं–बाबा, बाबा, ब्लैक शीप, कौन सा मूल्य पढ़ रहे है, बच्चों को क्यों नहीं सिखाते–

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।[3]

यह पंक्ति आत्मा को झकझोर देती है। हम कोरे मूल्य परक शिक्षा की बात कदापि नहीं करते हैं, क्योंकि विद्या अर्थकरी व विद्या धनोपार्जन का भी माध्यम है, पर संस्कारों को त्याग कर मूल्यों को पैरों तले, नहीं, अपितु इनको शिरोधार्य करके आगे बढ़िये। इसके लिये एक छोटी सी बात मैं अपने शिक्षक–बन्धुओं से कहना चाहूँगा कि विषय का ज्ञान कक्षा में जब हम दें, उसके साथ ही छात्रों को अपनी संस्कृति की गरिमा एवं महत्त्व को अवश्य बतायें। न रोज सप्ताह में तीन दिन ही सही पांच मिनट ही सही। हमारी थोड़ी सी सतर्कता, श्रम, पूरी–पूरी पीढ़ी बदल देगी। देश का भविष्य बदल देगी। ये छात्र की ऊर्जा है। हम शिक्षक उन्हें जिधर लगायेंगे वह उधर चलेंगे। गर्व का का विषय है कि हम शिक्षक हैं, हममें समाज की धारा मोड़ने की शक्ति, सामर्थ्य है। हम अपना आचरण भी अनुकरणीय रखें तभी जो हम आह्वान करेंगे, छात्र उसका अनुकरण वह अवश्य करेंगे। मत जाने दीजिये अपने देश के भविष्य को गर्त में बचा लीजिये इन बच्चों को उगते हुए सूरज है ये, अच्छी सही दिशा में दी गयी शिक्षा इन्हीं में से महात्मा गांधी पंडित जवाहर लाल नेहरू लायेंगी, अन्यथा दुःशासन बनते इन्हे देर नहीं लगेगी। यदि हम ऐसा कर सके तो हम देश के प्रति, समाज के प्रति सच्चे देशवासी की भूमिका निभाने में समर्थ होंगे।

सन्दर्भ

1. सुभाषितरत्नानि।
2. भारतीय धर्मशास्त्र।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान–झाँसी की रानी।